30—4—67 ओमशांति रात्रीक्लास

बच्चों को अच्छा2 अनुभव तो अभी यही बताना है कि हम कलियुगी मनुष्य से सतयुगी देवता बन रहे हैं। बड़ी खुशी की बात यह है। यह बात सिवाय तुम्हारे और कोई सुना नहीं सकते। कैसे बनते हैं वो समझाना चाहिए। ...अनुभव बताते हो कि किसने हमको रास्ता बताया। बाबा से फिर पूछेंगे कि बाबा ने कैसे प्रवेश किया। तुम्हारा अनुभव अपना ,इनका अनुभव फिर सबसे निराला है। यह बतावेंगे कि बाप ने प्रवेश किया और कैसे किया, कब किया वो तो बता नहीं सकेंगे। अंदाज सुनाया जाता है जब सा.हुआ। अभी समझते हो कि उंच ते उंच शिव है। उसने ही उंच बनाया है। बाप कहते हैं मेरा जन्म तो गाया हुआ है शिव जयंती। उसके बदले फिर कृष्ण जयंती का गायन कर दिया है। अभी बच्चे समझते हैं कि गीता का भगवान तो वो है जो सभी का फादर है। कृष्ण सभी का फादर नहीं है। कृष्ण चरित्र का खेल दिखाते हैं ना। शिव के चरित्र क्या दिखावेंगे?दिखला नहीं सकते। चरित्र वास्तव में तो हर एक आत्मा का होता है। नाटक में हर एक अपना2 चरित्र बनाते हैं। जो पार्ट मिला हुआ है। तुम जानते हो श्रीकृष्ण सतयुग का प्रिंस है। बस और कोई चतुराई है (नहीं)। पतित—पावन तो परमात्मा को ही कहते हैं। (सारे) पतित दुनियां के मनुष्यों को ले जाते हैं। यह है उंच ते उंच बाप का पार्ट। कहते हैं मैं भी ड्रामा के बंधन में बांधा हुआ हूँ। ड्रामा में अनादि नूंध है। इसलिए इसको अनादि अविनाशी वर्ल्ड ड्रामा गाया जाता है। इसका ना आदि ना अंत है। फिरता ही रहता है। दुनियां में यह कोई नहीं जानते हैं सिवाय तुम्हारे। मनुष्य कहते हैं बाबा हमको पतित से पावन बनाओ। सन्यासी कहते हैं कि आत्मा पतित नहीं होती है। शरीर बनता है। शरीर द्वारा ही .....दिखाई पड़ते हैं। बाप कहते हैं करती सब कुछ आत्मा है। आत्मा ही पार्ट बजाती है शरीर द्वारा। बाप बच्चों को समझाते हैं अवगुण सारे तुम्हारी आत्मा में हैं। संस्कार आत्मा में रहते हैं। शरीर .....जावेगा हम संस्कार ले जावेंगे। तुम देहधारी की महिमा नहीं गाते हो। बाप सभी वेदों—शास्त्रों का ब्रह्मा द्वारा सार सुनाते हैं। ब्रह्मा वा विष्णु नहीं समझाते हैं। भगवान बैठ समझाते हैं। ब्रह्मा विष्णु की नाभी कमल से नहीं निकला है। विष्णु का राज्य था विष्णुपुरी। ल.ना. के पिछाड़ी भी विष्णु रखते हैं। उनके ही यह दो...हैं। बच्चे जानते हैं इन्होंने विष्णुपुरी का राज्य कैसे लिया,फिर गंवाया कैसे?फिर भी ले रहे हैं। तुम श्रीमत पर फिर से अपने दैवी स्वराज्य की स्थापना करते हो। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतनी ही 21जन्मों के लिए ज्ञान रत्नों से झोली भरेंगे। यह एक2 ज्ञान रत्न लाख2 रुपये का है। वहां धन की गिनती नहीं होती है। अगणित है। पतित दुनियां का विनाश सामने खड़ा है। यह महाभारत लड़ाई की निशानी है विनाश की। फिर स्वर्ग के दरवाजे खुलने हैं। सुखधाम में तो है ही एक धर्म। बच्चों की सर्विस के लिए 12 चित्रों का कलैंडर बनाया जावे तो वो बहुत अच्छा है। सारी रचना रचता का ज्ञान तुम्हारे पास होगा। तो फिर किसी को भी चलते—फिरते फिर सहज समझा सकते हैं। दिन प्रतिदिन सहज होता जावेगा। जल्दी2 झाड़ बढ़ता जावेगा। उसके लिए युक्ति रची जाती है। बाप कहते हैं तुम मेरे पास आये हो। तुम भी पंडे हम भी पंडे। धर्म भी स्थापन करते हो ,राजधानी भी स्थापन करते हो। इसलिए ही रिलीजोपोलिटिकल स्प्रिचुअल नालेज गाया जाता है। आत्मा को अब बड़े बाप स्प्रिचुअल फादर से वर्सा मिलता है। तुम बच्चों को सुख बहुत है। इसलिए ही बाप कहते हैं कि तुम्हारा धर्म बहुत सुखों को देने वाला है। आगे चलकर सब समझ जावेंगे कि बरोबर अब विनाश होने वाला है। यह ब्र.कु.कु. तो बरोबर नई रचना रच रही है। अभी तो यहां आराम से बैठे हैं। जब भीड़ लगेगी तो नीचे से लेकर क्यू लग जावेगी। (भारी) भीड़ में पढ़ाई थोड़े ही हो (सकती है)। वो लाइफ अच्छी नहीं है। तुम्हारे में तो यह सब जैसे कि बड़े2 एप्स हैं। शास्त्रों में भी भगवान ने एप्स की सेना ली है। बच्चे जानते हैं हमको बाबा गुल—गुल बना रहे हैं। बाबा हमारा बाप ,टीचर, सतगुरू है। बाप हमको पढ़ाते हैं। माया बहुत दुस्तर है। भगवान पढ़ाते हैं। विश्व का मालिक बनाने तो भी माया..... .....ही नहीं है।